

Amit seeds, khandwa

Address : Gram Taklimori Indore Road, Khandwa (M.P) -450001

E Mail Id - amitseeds@gmail.com

(In Hindi)

रबी गेहू एवं चना उत्पादन कृषि कार्यमाला

क्र.	फसल	क्रिस्म	पकने की अवधि (दिनों में)	बोने की समयावधि	उपज (क्विंटल/एकड)	अनुकूल क्षेत्र
1	गेहूँ (Wheat)	LOK-1	110-115	10 नव. - 25 नव.	15-20	म.प्र., छ.ग.,महाराष्ट्र,गुजरात,राजस्थान,ते लंगाना,कर्नाटक
2	गेहूँ (Wheat)	HI-1544 (पूर्णा)	110-115	10 नव. - 25 नव.	15-20	म.प्र., छ.ग.,महाराष्ट्र,गुजरात,राजस्थान,ते लंगाना,कर्नाटक
3	चना (Gram)	JAKI-9218	95-105	20 अक्टू. - 05 नव.	16-20 / हैक्ट.	म.प्र., छ.ग.,महाराष्ट्र,गुजरात,राजस्थान,ते लंगाना,कर्नाटक
4	चना (Gram)	RVG-202	100-110	20 अक्टू. - 05 नव.	16-20 / हैक्ट.	म.प्र., छ.ग.,महाराष्ट्र,गुजरात,राजस्थान,ते लंगाना,कर्नाटक

1) बुवाई का उचित समय:- जब दैनिक औसत तापमान 23 डिग्री के आसपास हो तो बुवाई के लिए उपयुक्त समय रहेगा !

क्रिस्म अनुसार टेबल में दर्शाई गयी क्रिस्मो को समयावधि में बुवाई करना उपयुक्त होगा !

2) बीज दर :- सामान्य तौर पर गेहूँ में छोटे दाने वाली क्रिस्म के लिए 40 किलो प्रति एकड और बड़े दाने वाली क्रिस्मों के लिए

40-45 किलो प्रति एकड बोना चाहिए, चने कि बुवाई 30 किलो प्रति एकड बोना चाहिए !

3) बीज उपचार :- बीज को थायरम की 2.5 ग्राम मात्रा प्रति किलो से उपचारित करने के बाद 200 ग्राम प्रति किलो की दर से

एजेंटोबेक्टर बीज में मिलाकर बुवाई करना उपयुक्त होगा !

4) उर्वरक की मात्रा :- मिट्टी की जांच के उपरान्त उर्वरक की मात्रा निर्धारित करे ! 48 किलो नाइट्रोजन, 24 किलो फास्फोरस

12 किलो पोटैश एवं 10 किलो जिंक सल्फेट प्रति एकड लाभदायक रहेगा ! (फसलनुसार खाद की मात्रा ऊपर नीचे हो सकती है !

5) बुवाई की विधि :- बीज को सदैव कतारों में बोना चाहिए ! दो कतारों के बीच 20-30 से.मी. रखें ! जहाँ तक संभव हो सीडड्रिल

से बुवाई करे ! बीज को अधिक गहरा न बोयें ! गेहूँ की बुवाई 4-5 से.मी. एवं चने की बुवाई 3-6 से.मी. की गहराई तक रखें !

6) सिंचाई :- सिंचाई की उपलब्धता एवं फसल की अवस्था अनुसार सिंचाई करे ! बोनी के 20 दिन बाद पहली सिंचाई अत्यंत

महत्वपूर्ण है ! इसके बाद प्रत्येक 20-22 दिन के अंतराल पर आवश्यकता अनुसार 4-6 से.मी. सिंचाई करे !

7) खरपतवार नियंत्रण :- खेत को खरपतवार मुक्त रखना आवश्यक है ! हाथ से निराई-गुड़ाई करके या फिर रासायनिक खरपतवार

नियंत्रण के लिए स्थानीय कृषि अधिकारी वैज्ञानिक की अनुशंसा अनुसार खरपतवार नाशक दवाई का उपयोग करे !

8) कटाई व गहाई :- गोहूँ एवं चने की कटाई हमेशा 14-18% नमी होने पर उपयुक्त रहेगा ! खेत में फसल की माली माटी सूखने पर ही कटाई करे !

9) भंडारण :- भंडारण करते समय दानों में नमी 10-12% के बीच रहे, भंडारण में कीट प्रकोप से बचा रहे ! गोहूँ एवं चने को धूप में सुखाकर भंडारण करना चाहिए !

10) गोहूँ फसल उत्पादन क्षेत्रिय कृषि अनुसंधान के वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन अनुसार करना उचित होगा !

11) उपरोक्त जानकारी कंपनी व कृषि वैज्ञानिकों के अनुसंधान के अनुभवों पर आधारित है ! समस्त अनुकूल परिस्थितियों में !

12) चने की बुवाई का अक्टूबर का प्रथम सप्ताह सर्वोत्तम होता है !

13) चने की अच्छी पैदावार के लिए 20 किलो नाइट्रोजन और 40 किलो फास्फोरस प्रति हेक्टर खेतों में मिलाये !

नोट :- बुवाई करने से पहले थैली में रखी हुई विष (थायरम) बीज को उपचारित करें !

सूचना :- इस कार्यमाला में दी गई जानकारियाँ कंपनी के अनुसंधान केंद्र के अनुभवों पर आधारित है ! मौसम तथा भूमि के बदलाव से इसमें फर्क आना संभव है जिस पर हमारा नियंत्रण नहीं है !

Amit seeds, khandwa

Address : Gram Taklimori Indore Road, Khandwa (M.P) -450001

E Mail Id - amitseeds@gmail.com

(In Marathi)

रब्बी गहू आणि हरभरा उत्पादन कृषी कार्य मालिका

क्र.	पीक	विविधता	पिकण्याचा कालावधी (दिवसांमध्ये)	पेरणीची वेळ	उत्पन्न (क्विट/एकर)	अनुकूल क्षेत्र
1	गहू (Wheat)	LOK-1	110-115	10 नव. - 25 नव.	15-20	म.प्र., छ.ग.,महाराष्ट्र,गुजरात,राजस्थानतेलं गाना,कर्नाटक
2	गहू (Wheat)	HI-1544 (पूर्णा)	110-115	10 नव. - 25 नव.	15-20	म.प्र., छ.ग.,महाराष्ट्र,गुजरात,राजस्थानतेलं गाना,कर्नाटक
3	चना (Gram)	JAKI-9218	95-105	20 अक्टू. - 05 नव.	16-20 / हैक्ट.	म.प्र., छ.ग.,महाराष्ट्र,गुजरात,राजस्थानतेलं गाना,कर्नाटक
4	चना (Gram)	RVG-202	100-110	20 अक्टू. - 05 नव.	16-20 / हैक्ट.	म.प्र., छ.ग.,महाराष्ट्र,गुजरात,राजस्थानतेलं गाना,कर्नाटक

१) पेरणीसाठी योग्य वेळ: जेव्हा दैनंदिन सरासरी तापमान सुमारे २३ अंश असते, तेव्हा तो पेरणीसाठी योग्य वेळ असेल.

जातीनुसार टेबलमध्ये दाखवलेल्या कालावधीत जातींची पेरणी करणे योग्य ठरेल.

२) बियाण्याचे प्रमाण -: साधारणपणे, गव्हाच्या लहान धान्याच्या जातींसाठी प्रति एकर ४० किलो आणि मोठ्या धान्याच्या

जातींसाठी प्रति एकर ४०-४५ किलो, हरभरा पिकासाठी प्रति एकर ३० किलो पेरणी करावी.

३) बियाणे प्रक्रिया -: प्रति किलो २.५ ग्रॅम थायरमने बियाण्यांवर प्रक्रिया केल्यानंतर, २०० ग्रॅम प्रति किलो या दराने एजंटबॅक्टर

मिसळून बियाणे पेरणे योग्य ठरेल.

४) खतांचे प्रमाण: माती परीक्षणानंतर किती खत द्यावे हे ठरवा. प्रति एकर ४८ किलो नायट्रोजन, २४ किलो फॉस्फरस, १२ किलो

पोटॅश शकते.) आणि १० किलो झिंक सल्फेट देणे फायदेशीर ठरेल. (पिकानुसार खताचे प्रमाण बदलू शकते.)

५) पेरणी पद्धत: बियाणे नेहमी ओळींमध्ये पेरवावे. ओळींमध्ये २०-३० सेमी अंतर ठेवावे. शक्य असेल तेव्हा, बियाणे ड्रिल

वापरून बियाणे पेरवावे. बियाणे जास्त खोलवर पेरणे टाळा. गहू ४-५ सेमी खोलीपर्यंत आणि हरभरा ३-६ सेमी खोलीपर्यंत पेरवावा.

६) सिंचन: सिंचनाच्या पाण्याची उपलब्धता आणि पिकाच्या स्थितीनुसार सिंचन करा. पेरणीनंतर २० दिवसांनी पहिले सिंचन

देऊन क्षेत्राला पाणी द्या. अत्यंत महत्वाचे आहे. त्यानंतर, गरजेनुसार दर २०-२२ दिवसांनी ४-६ सेंमी सिंचन देऊन क्षेत्राला पाणी द्या.

७) तण नियंत्रण: शेत तणमुक्त ठेवणे आवश्यक आहे! हाताने तण उपटून किंवा तुमच्या स्थानिक कृषी अधिकारी किंवा शास्त्रज्ञांनी

शिफारस केलेल्या तणनाशकाचा वापर करून रासायनिक तण नियंत्रण करा.

८) कापणी आणि मळणी: गहू आणि हरभरा पिकांची काढणी नेहमीच आर्द्रतेचे प्रमाण १४-१८% असताना करणे चांगले. बागायत

दारांनी माती कोरडी असतानाच पिकांची कापणी करावी.

९) साठवणूक: साठवणीदरम्यान, धान्यांचे ओलावा १०-१२% च्या दरम्यान असावा, जेणेकरून त्यांना कीटकांच्या प्रादुर्भावापासून

संरक्षण मिळेल. साठवणीपूर्वी गहू आणि हरभरा उन्हात वाळवावेत.

१०) प्रादेशिक कृषी संशोधन शास्त्रज्ञांच्या मार्गदर्शनानुसार गहू पिकाचे उत्पादन घेणे योग्य ठरेल.

११) वरील माहिती कंपनी आणि कृषी शास्त्रज्ञांच्या संशोधन अनुभवावर आधारित आहे, सर्व अनुकूल परिस्थितीत.

१२) हरभरा पेरणीसाठी ऑक्टोबरचा पहिला आठवडा हा सर्वोत्तम काळ आहे.

१३) हरभरा पिकाच्या चांगल्या उत्पादनासाठी शेतात प्रति हेक्टर २० किलो नत्र आणि ४० किलो स्फुरद मिसळावे.

टीप: पेरणीपूर्वी, पिशवीत ठेवलेल्या विषाने (थिरम) बियाण्यांवर प्रक्रिया करा.

टीप: या कामात दिलेली माहिती कंपनीच्या संशोधन केंद्राच्या अनुभवावर आधारित आहे. हवामान आणि भूप्रदेशात बदल शक्य आहेत, जे आमच्या नियंत्रणाबाहेर आहेत.

Amit seeds, khandwa

Address : Gram Taklimori Indore Road, Khandwa (M.P) -450001

E Mail Id - amitseeds@gmail.com

(In Telugu)

రబీ గోధుమ మరియు పప్పుధాన్యాల ఉత్పత్తి వ్యవసాయ పని శ్రేణి

క్రమ సంఖ్య	పంట	వివిధ	పండిన కాలం (రోజుల్లో)	వితే సమయం	దిగుబడి (క్వింట్/ఎకరం)	అనుకూలమైన జోన్
1	గోధుమలు	LOK-1	110-115	నవంబర్ 10 - నవంబర్ 25	15-20	మధ్యప్రదేశ్, ఛత్తీస్ గఢ్, మహారాష్ట్ర, గుజరాత్, రాజస్థాన్, తెలంగాణ, కర్ణాటక
2	గోధుమలు	HI-1544 (పూర్ణ)	110-115	నవంబర్ 10 - నవంబర్ 25	15-20	మధ్యప్రదేశ్, ఛత్తీస్ గఢ్, మహారాష్ట్ర, గుజరాత్, రాజస్థాన్, తెలంగాణ, కర్ణాటక
3	గ్రాము	జాకీ-9218	95-105	20 అక్టోబర్ - 05 నవంబర్	16-20/హెక్టారు.	మధ్యప్రదేశ్, ఛత్తీస్ గఢ్, మహారాష్ట్ర, గుజరాత్, రాజస్థాన్, తెలంగాణ, కర్ణాటక
4	గ్రాము	ఆర్విజి-202	100-110	20 అక్టోబర్ - 05 నవంబర్	16-20/హెక్టారు.	మధ్యప్రదేశ్, ఛత్తీస్ గఢ్, మహారాష్ట్ర, గుజరాత్, రాజస్థాన్, తెలంగాణ, కర్ణాటక

- 1) విత్తడానికి ఉత్తమ సమయం: రోజువారీ సగటు ఉష్ణోగ్రత 23 డిగ్రీలు ఉన్నప్పుడు, విత్తడానికి ఉత్తమ సమయం. పట్టికలో చూపిన కాల వ్యవధిలో రకాలను విత్తడం ఉత్తమం.
- 2) విత్తన రేటు -: సాధారణంగా, చిన్న ధాన్యం రకాల గోధుమలకు ఎకరానికి 40 కిలోలు మరియు పెద్ద ధాన్యం రకాలకు ఎకరానికి 40-45 కిలోలు, పప్పుధాన్యాలకు ఎకరానికి 30 కిలోలు విత్తుకోవాలి.
- 3) విత్తన శుద్ధి -: కిలోకు 2.5 గ్రాముల థైరమ్ తో విత్తనాలను శుద్ధి చేసిన తర్వాత, కిలోకు 200 గ్రాముల చొప్పున ఏజెంట్ బాక్టర్ ను కలిపి విత్తనాలను విత్తడం సముచితం.
- 4) ఎరువుల పరిమాణం: నేల పరీక్ష తర్వాత వేయాలిసిన ఎరువుల పరిమాణాన్ని నిర్ణయించండి. ఎకరానికి 48 కిలోల నత్రజని, 24 కిలోల భాస్వరం, 12 కిలోల పొటాష్ మరియు 10 కిలోల జింక్ సల్ఫేట్ ప్రయోజనకరంగా ఉంటుంది. (పంటను బట్టి ఎరువుల పరిమాణం మారవచ్చు.)
- 5) విత్తే విధానం: విత్తనాలను ఎల్లప్పుడూ వరుసలలో విత్తుకోవాలి. వరుసల మధ్య 20-30 సెం.మీ దూరం ఉంచండి. వీలైనప్పుడల్లా, సీడ్ డ్రీల్ ఉపయోగించి విత్తనాలను విత్తండి. విత్తనాలను చాలా లోతుగా విత్తకుండా ఉండండి. గోధుమలను 4-5 సెం.మీ లోతు వరకు మరియు శనగపప్పును 3-6 సెం.మీ లోతు వరకు విత్తండి.
- 6) నీటిపారుదల: నీటిపారుదల నీటి లభ్యత మరియు పంట స్థితిని బట్టి నీరు పెట్టండి. విత్తిన 20 రోజుల తర్వాత మొదటి నీటిపారుదల చాలా ముఖ్యం. దీని తరువాత, ప్రతి 20-22 రోజులకు ఒకసారి 4-6 సెం.మీ. నీటిపారుదలని అందించి, అవసరమైన విధంగా ఆ ప్రాంతానికి నీరు పెట్టండి.

7) కలుపు నియంత్రణ: పొలంలో కలుపు లేకుండా ఉంచడం చాలా అవసరం! మీ స్థానిక వ్యవసాయ అధికారి

లేదా శాస్త్రవేత్త సిఫార్సు చేసిన కలుపు మందులతో చేతితో కలుపు తీయడం లేదా రసాయన కలుపు నియం

త్రణ ద్వారా కలుపు నియంత్రణను ఉపయోగించండి.

8) కోత మరియు నూర్చిడి: గోధుమ మరియు శనగ పంటలు 14-18% తేమ ఉన్నప్పుడు కోయడం ఎల్లప్పుడూ

ఉత్తమం. తోటమాలి నేల ఎండిపోయినప్పుడు మాత్రమే పంటలను కోయాలి.

9) నిల్వ: నిల్వ సమయంలో, ధాన్యాల తేమ 10-12% మధ్య ఉండాలి, తద్వారా అవి కీటకాల దాడి నుండి రక్షిం

చబడతాయి. గోధుమలు మరియు పప్పులను నిల్వ చేయడానికి ముందు ఎండలో ఆరబెట్టాలి.

10) ప్రాంతీయ వ్యవసాయ పరిశోధన శాస్త్రవేత్తల మార్గదర్శకత్వంలో గోధుమ పంటను ఉత్పత్తి చేయడం

సముచితంగా ఉంటుంది.

11) పైన పేర్కొన్న సమాచారం అన్ని అనుకూల పరిస్థితులలో కంపెనీ మరియు వ్యవసాయ శాస్త్రవేత్తల

పరిశోధన అనుభవం ఆధారంగా రూపొందించబడింది.

12) అక్టోబర్ మొదటి వారం శనగ విత్తడానికి ఉత్తమ సమయం.

13) మంచి దిగుబడి కోసం, పొలాలలో హెక్టారుకు 20 కిలోల నత్రజని మరియు 40 కిలోల భాస్వరం కలపండి.

గమనిక: విత్తే ముందు, విత్తనాలను సంచిలో ఉంచిన విషం (థిరం) తో శుద్ధి చేయండి.

గమనిక: ఈ పనిలో అందించిన సమాచారం కంపెనీ పరిశోధన కేంద్రం అనుభవం ఆధారంగా రూపొందించబ

డింది. వాతావరణం మరియు భూభాగంలో మార్పులు సాధ్యమే, అవి మా నియంత్రణకు మించినవి.

Amit seeds, khandwa

Address : Gram Taklimori Indore Road, Khandwa (M.P) -450001

E Mail Id - amitseeds@gmail.com

(In Kannad)

ರಬಿ ಗೋಧಿ ಮತ್ತು ಬೇಳೆ ಉತ್ಪಾದನೆ ಕೃಷಿ ಕಾರ್ಯ ಸರಣಿ

ಸರಣಿ ಸಂಖ್ಯೆ	ಬೆಳೆ	ವಿವಿಧ	ಹಣ್ಣಾಗುವ ಅವಧಿ (ದಿನಗಳಲ್ಲಿ)	ಬಿತ್ತನೆ ಸಮಯ	ಇಳುವರಿ (ಕ್ವಿಂಟ್/ಎಕರೆ)	ಅನುಕೂಲಕರ ವಲಯ
1	ಗೋಧಿ	LOK-1	110-115	ನವೆಂಬರ್ 10 - ನವೆಂಬರ್ 25	15-20	ಮಧ್ಯಪ್ರದೇಶ, ಛತ್ತೀಸ್‌ಗಢ, ಮಹಾರಾಷ್ಟ್ರ, ಗುಜರಾತ್, ರಾಜಸ್ಥಾನ, ತೆಲಂಗಾಣ, ಕರ್ನಾಟಕ
2	ಗೋಧಿ	HI-1544 (ಪೂರ್ಣ)	110-115	ನವೆಂಬರ್ 10 - ನವೆಂಬರ್ 25	15-20	ಮಧ್ಯಪ್ರದೇಶ, ಛತ್ತೀಸ್‌ಗಢ, ಮಹಾರಾಷ್ಟ್ರ, ಗುಜರಾತ್, ರಾಜಸ್ಥಾನ, ತೆಲಂಗಾಣ, ಕರ್ನಾಟಕ
3	ಗ್ರಾಂ	ಜಾಕಿ-9218	95-105	20 ಅಕ್ಟೋಬರ್ - 05 ನವೆಂಬರ್	೧೬-೨೦/ಹೆಕ್ಟೇರ್.	ಮಧ್ಯಪ್ರದೇಶ, ಛತ್ತೀಸ್‌ಗಢ, ಮಹಾರಾಷ್ಟ್ರ, ಗುಜರಾತ್, ರಾಜಸ್ಥಾನ, ತೆಲಂಗಾಣ, ಕರ್ನಾಟಕ
4	ಗ್ರಾಂ	ಆರ್‌ವಿಜಿ-202	100-110	20 ಅಕ್ಟೋಬರ್ - 05 ನವೆಂಬರ್	೧೬-೨೦/ಹೆಕ್ಟೇರ್.	ಮಧ್ಯಪ್ರದೇಶ, ಛತ್ತೀಸ್‌ಗಢ, ಮಹಾರಾಷ್ಟ್ರ, ಗುಜರಾತ್, ರಾಜಸ್ಥಾನ, ತೆಲಂಗಾಣ, ಕರ್ನಾಟಕ

೧) ಬಿತ್ತನೆಗೆ ಸೂಕ್ತ ಸಮಯ: ದೈನಂದಿನ ಸರಾಸರಿ ತಾಪಮಾನ ಸುಮಾರು ೨೩ ಡಿಗ್ರಿ ಇದ್ದಾಗ, ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡಲು ಸೂಕ್ತ

ಸಮಯ. ಕೋಷ್ಟಕದಲ್ಲಿ ತೋರಿಸಿರುವ ಸಮಯದೊಳಗೆ ಪ್ರಭೇದಗಳನ್ನು ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡುವುದು ಸೂಕ್ತ.

೨) ಬೀಜ ದರ :- ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ, ಸಣ್ಣ ಧಾನ್ಯದ ತಳಿಗಳಾದ ಗೋಧಿಗೆ ಎಕರೆಗೆ ೪೦ ಕೆಜಿ ಮತ್ತು ದೊಡ್ಡ ಧಾನ್ಯದ

ತಳಿಗಳಿಗೆ ಎಕರೆಗೆ ೪೦-೪೫ ಕೆಜಿ, ಕಡಲೆಗೆ ಎಕರೆಗೆ ೩೦ ಕೆಜಿ ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡಬೇಕು.

3) ಬೀಜ ಸಂಸ್ಕರಣೆ :- ಪ್ರತಿ ಕೆಜಿಗೆ 2.5 ಗ್ರಾಂ ಧಿರಮ್‌ನೊಂದಿಗೆ ಬೀಜಗಳನ್ನು ಸಂಸ್ಕರಿಸಿದ ನಂತರ, ಪ್ರತಿ ಕೆಜಿಗೆ 200

ಗ್ರಾಂ ದರದಲ್ಲಿ ಏಜಿಂಟೊಬ್ಯಾಕ್ಟರ್ ಅನ್ನು ಬೆರೆಸಿ ಬೀಜಗಳನ್ನು ಬಿತ್ತುವುದು ಸೂಕ್ತವಾಗಿರುತ್ತದೆ.

4) ರಸಗೊಬ್ಬರದ ಪ್ರಮಾಣ: ಮಣ್ಣು ಪರಿಶ್ಕೇಯ ನಂತರ ಹಾಕಬೇಕಾದ ರಸಗೊಬ್ಬರದ ಪ್ರಮಾಣವನ್ನು ನಿರ್ಧರಿಸಿ.

ಎಕರೆಗೆ 48 ಕೆಜಿ ಸಾರಜನಕ, 24 ಕೆಜಿ ರಂಜಕ, 12 ಕೆಜಿ ಫೊಸ್ಫಾಟ್ ಮತ್ತು 10 ಕೆಜಿ ಸತು ಸಲ್ಫೇಟ್ ಪ್ರಯೋಜನಕಾರಿಯಾಗಿದೆ. (ಬೆಳೆಯನ್ನು ಅವಲಂಬಿಸಿ ರಸಗೊಬ್ಬರದ ಪ್ರಮಾಣವು ಬದಲಾಗಬಹುದು.)

5) ಬಿತ್ತನೆ ವಿಧಾನ: ಬೀಜಗಳನ್ನು ಯಾವಾಗಲೂ ಸಾಲುಗಳಲ್ಲಿ ಬಿತ್ತಬೇಕು. ಸಾಲುಗಳ ನಡುವೆ 20-30 ಸೆ.ಮೀ ಅಂತ

ರವಿರಲಿ. ಸಾಧ್ಯವಾದಾಗಲೆಲ್ಲಾ, ಬೀಜ ಡ್ರಿಲ್ ಬಳಸಿ ಬೀಜಗಳನ್ನು ಬಿತ್ತಿ. ಬೀಜಗಳನ್ನು ತುಂಬಾ ಆಳವಾಗಿ

ಬಿತ್ತುವುದನ್ನು ತಪ್ಪಿಸಿ. ಗೋಧಿಯನ್ನು 4-5 ಸೆ.ಮೀ ಆಳಕ್ಕೆ ಮತ್ತು ಕಡಲೆಯನ್ನು 3-6 ಸೆ.ಮೀ ಆಳಕ್ಕೆ ಬಿತ್ತಬೇಕು.

6) ನೀರಾವರಿ: ನೀರಾವರಿ ನೀರಿನ ಲಭ್ಯತೆ ಮತ್ತು ಬೆಳೆಯ ಸ್ಥಿತಿಗೆ ಅನುಗುಣವಾಗಿ ನೀರಾವರಿ ಮಾಡಿ. ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡಿದ

20 ದಿನಗಳ ನಂತರ ಮೊದಲ ನೀರಾವರಿ ಬಹಳ ಮುಖ್ಯ. ಇದರ ನಂತರ, ಅಗತ್ಯವಿರುವಂತೆ ಪ್ರತಿ 20-22

ದಿನಗಳಿಗೊಮ್ಮೆ 4-6 ಸೆ.ಮೀ. ನೀರಾವರಿ ನೀಡಿ.

- 7) ಕಳೆ ನಿಯಂತ್ರಣ: ಹೊಲವನ್ನು ಕಳೆ ಮುಕ್ತವಾಗಿಡುವುದು ಅತ್ಯಗತ್ಯ! ನಿಮ್ಮ ಸ್ಥಳೀಯ ಕೃಷಿ ಅಧಿಕಾರಿ ಅಥವಾ ವಿಜ್ಞಾನಿಗಳು ಶಿಫಾರಸು ಮಾಡಿದ ಕಳೆನಾಶಕದೊಂದಿಗೆ ಕೈಯಿಂದ ಕಳೆ ಕಿತ್ತುವುದು ಅಥವಾ ರಾಸಾಯನಿಕ ಕಳೆ ನಿಯಂತ್ರಣದ ಮೂಲಕ ಕಳೆ ನಿಯಂತ್ರಣವನ್ನು ಬಳಸಿ.
- 8) ಕೊಯ್ಲು ಮತ್ತು ಒಕ್ಕಣೆ: ತೇವಾಂಶ 14-18% ಇದ್ದಾಗ ಗೋಧಿ ಮತ್ತು ಕಡಲೆಗಳನ್ನು ಕೊಯ್ಲು ಮಾಡುವುದು ಯಾವಾಗಲೂ ಉತ್ತಮ. ಮಣ್ಣು ಒಣಗಿದಾಗ ಮಾತ್ರ ತೋಟಗಾರರು ಬೆಳೆಗಳನ್ನು ಕೊಯ್ಲು ಮಾಡಬೇಕು.
- 9) ಸಂಗ್ರಹಣೆ: ಶೇಖರಣಾ ಸಮಯದಲ್ಲಿ, ಧಾನ್ಯಗಳ ತೇವಾಂಶವು 10-12% ರ ನಡುವೆ ಇರಬೇಕು, ಇದು ಕೀಟಗಳ ಬಾಧೆಯಿಂದ ರಕ್ಷಿಸಲು ಸಹಾಯ ಮಾಡುತ್ತದೆ. ಶೇಖರಣಾ ಮೊದಲು ಗೋಧಿ ಮತ್ತು ಬೆಳೆಯನ್ನು ಬಿಸಿಲಿನಲ್ಲಿ ಒಣಗಿಸಬೇಕು.
- 10) ಪ್ರಾದೇಶಿಕ ಕೃಷಿ ಸಂಶೋಧನಾ ವಿಜ್ಞಾನಿಗಳ ಮಾರ್ಗದರ್ಶನದ ಪ್ರಕಾರ ಗೋಧಿ ಬೆಳೆ ಉತ್ಪಾದಿಸುವುದು ಸೂಕ್ತವಾಗಿರುತ್ತದೆ.
- 11) ಮೇಲಿನ ಮಾಹಿತಿಯು ಎಲ್ಲಾ ಅನುಕೂಲಕರ ಪರಿಸ್ಥಿತಿಗಳಲ್ಲಿ ಕಂಪನಿ ಮತ್ತು ಕೃಷಿ ವಿಜ್ಞಾನಿಗಳ ಸಂಶೋಧನಾ ಅನುಭವವನ್ನು ಆಧರಿಸಿದೆ.
- ೧೨) ಅಕ್ಟೋಬರ್ ಮೊದಲ ವಾರವು ಕಡಲೆ ಬಿತ್ತನೆಗೆ ಉತ್ತಮ ಸಮಯ.
- 13) ಉತ್ತಮ ಇಳುವರಿಗಾಗಿ, ಹೊಲಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರತಿ ಹೆಕ್ಟೇರ್‌ಗೆ 20 ಕೆಜಿ ಸಾರಜನಕ ಮತ್ತು 40 ಕೆಜಿ ರಂಜಕವನ್ನು ಸೇರಿಸಿ.

ಗಮನಿಸಿ: ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡುವ ಮೊದಲು, ಚೀಲದಲ್ಲಿ ಇರಿಸಲಾಗಿರುವ ವಿಷ (ಥಿರಮ್) ನೊಂದಿಗೆ ಬೀಜಗಳನ್ನು ಸಂಸ್ಕರಿಸಿ.

ಗಮನಿಸಿ: ಈ ಕೆಲಸದಲ್ಲಿ ಒದಗಿಸಲಾದ ಮಾಹಿತಿಯು ಕಂಪನಿಯ ಸಂಶೋಧನಾ ಕೇಂದ್ರದ ಅನುಭವವನ್ನು ಆಧರಿಸಿದೆ. ಹವಾಮಾನ ಮತ್ತು ಭೂಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿನ ಬದಲಾವಣೆಗಳು ಸಾಧ್ಯ, ಅದು ನಮ್ಮ ನಿಯಂತ್ರಣಕ್ಕೆ ಮೀರಿದ್ದು.

Amit seeds, khandwa

Address : Gram Taklimori Indore Road, Khandwa (M.P) -450001

E Mail Id - amitseeds@gmail.com

(In Gujarati)

રવી ઘઉં અને ચણા ઉત્પાદન કૃષિ કાર્ય શ્રેણી

ક્ર.	પાક	વિવિધતા	પાકવાનો સમયગાળો (દિવસોમાં)	વાવણીનો સમય	ઉપજ (કિવન્ટ/એકર)	અનુકૂળ ઝોન
1	ઘઉં	લોક-૧	110-115	૧૦ નવેમ્બર - ૨૫ નવેમ્બર	15-20	મધ્યપ્રદેશ, છત્તીસગઢ, મહારાષ્ટ્ર, ગુજરાત, રાજસ્થાન, તેલંગાણા, કર્ણાટક
2	ઘઉં	HI-1544 (પૂર્ણા)	110-115	૧૦ નવેમ્બર - ૨૫ નવેમ્બર	15-20	મધ્યપ્રદેશ, છત્તીસગઢ, મહારાષ્ટ્ર, ગુજરાત, રાજસ્થાન, તેલંગાણા, કર્ણાટક
3	ગ્રામ	જાકી-૯૨૧૮	95-105	20 ઓક્ટોબર - 05 નવેમ્બર	૧૬-૨૦/હેક્ટર.	મધ્યપ્રદેશ, છત્તીસગઢ, મહારાષ્ટ્ર, ગુજરાત, રાજસ્થાન, તેલંગાણા, કર્ણાટક
4	ગ્રામ	આરવીજી-202	100-110	20 ઓક્ટોબર - 05 નવેમ્બર	૧૬-૨૦/હેક્ટર.	મધ્યપ્રદેશ, છત્તીસગઢ, મહારાષ્ટ્ર, ગુજરાત, રાજસ્થાન, તેલંગાણા, કર્ણાટક

૧) વાવણી માટે શ્રેષ્ઠ સમય: જ્યારે દૈનિક સરેરાશ તાપમાન ૨૩ ડિગ્રીની આસપાસ હોય છે, ત્યારે તે વાવણી માટે શ્રેષ્ઠ સમય છે.

કોષ્ટકમાં દર્શાવેલ સમયગાળામાં જાતો વાવવી શ્રેષ્ઠ છે.

૨) બીજ દર :- સામાન્ય રીતે, ઘઉંની નાના અનાજની જાતો માટે પ્રતિ એકર ૪૦ કિલો અને મોટા અનાજની જાતો માટે પ્રતિ એકર

૪૦-૪૫ કિલો, ચણા માટે પ્રતિ એકર ૩૦ કિલો વાવણી કરવી જોઈએ.

૩) બીજ માવજત :- બીજને ૨.૫ ગ્રામ થિરામ પ્રતિ કિલોગ્રામ સાથે માવજત કર્યા પછી, ૨૦૦ ગ્રામ પ્રતિ કિલોગ્રામના દરે

એજન્ટોબેક્ટર ભેળવીને બીજ વાવવું યોગ્ય રહેશે.

૪) ખાતરની માત્રા: માટી પરીક્ષણ પછી ખાતરની માત્રા નક્કી કરો. પ્રતિ એકર ૪૮ કિલો નાઇટ્રોજન, ૨૪ કિલો ફોસ્ફરસ, ૧૨ કિલો

પોટાશ અને ૧૦ કિલો ઝીંક સલ્ફેટ ફાયદાકારક રહેશે. (પાકના આધારે ખાતરની માત્રા બદલાઈ શકે છે.)

૫) વાવણી પદ્ધતિ: બીજ હંમેશા હરોળમાં વાવવા જોઈએ. હરોળ વચ્ચે ૨૦-૩૦ સે.મી.નું અંતર રાખો. શક્ય હોય ત્યારે, સીડ

ડ્રીલનો ઉપયોગ કરીને બીજ વાવો. બીજ ખૂબ ઊંડા વાવવાનું ટાળો. ઘઉં ૪-૫ સે.મી. અને ચણા ૩-૬ સે.મી.ની ઊંડાઈ સુધી વાવો.

૬) સિંચાઈ: સિંચાઈના પાણીની ઉપલબ્ધતા અને પાકની સ્થિતિ અનુસાર સિંચાઈ કરો. વાવણી પછી 20 દિવસ પછી પહેલું

સિંચાઈ ખૂબ જ મહત્વપૂર્ણ છે. આ પછી, જરૂરિયાત મુજબ દર 20-22 દિવસે વિસ્તારને સિંચાઈ આપો, 4-6 સેમી પિયત આપો.

૭) નીંદણ નિયંત્રણ: ખેતરને નીંદણમુક્ત રાખવું ખૂબ જ જરૂરી છે! હાથથી નીંદણ કાઢીને અથવા તમારા સ્થાનિક કૃષિ અધિકારી

અથવા વૈજ્ઞાનિક દ્વારા ભલામણ કરાયેલ હર્બિસાઇડનો ઉપયોગ કરીને રાસાયણિક નીંદણ નિયંત્રણનો ઉપયોગ કરો.

૮) લણણી અને શ્રેસીંગ: ઘઉં અને ચણાની લણણી હંમેશા ૧૪-૧૮% ભેજ હોય ત્યારે શ્રેષ્ઠ રહે છે. માળીઓએ પાકની લણણી

ત્યારે જ કરવી જોઈએ જ્યારે જમીન સૂકી હોય.

૯) સંગ્રહ: સંગ્રહ દરમિયાન, અનાજને જંતુઓના ઉપદ્રવથી બચાવવા માટે તેમાં ભેજનું પ્રમાણ ૧૦-૧૨% ની વચ્ચે હોવું જોઈએ.

સંગ્રહ કરતા પહેલા ઘઉં અને ચણાને તડકામાં સૂકવવા જોઈએ.

૧૦) પ્રાદેશિક કૃષિ સંશોધન વૈજ્ઞાનિકોના માર્ગદર્શન મુજબ ઘઉંના પાકનું ઉત્પાદન કરવું યોગ્ય રહેશે.

૧૧) ઉપરોક્ત માહિતી કંપની અને કૃષિ વૈજ્ઞાનિકોના સંશોધન અનુભવ પર આધારિત છે, બધી અનુકૂળ પરિસ્થિતિઓમાં.

૧૨) ઓક્ટોબરનો પહેલો અઠવાડિયું ચણાના વાવેતર માટે શ્રેષ્ઠ સમય છે.

૧૩) ચણાના સારા ઉત્પાદન માટે, ખેતરમાં પ્રતિ હેક્ટર ૨૦ કિલો નાઇટ્રોજન અને ૪૦ કિલો ફોસ્ફરસ ઉમેરો.

નોંધ: વાવણી કરતા પહેલા, બીજને કોથળીમાં રાખેલા ઝેર (થિરમ) થી માવજત કરો.

નોંધ: આ કાર્યમાં આપવામાં આવેલી માહિતી કંપનીના સંશોધન કેન્દ્રના અનુભવ પર આધારિત છે. હવામાન અને ભૂપ્રદેશમાં ફેરફાર શક્ય છે, જે આપણા નિયંત્રણની બહાર છે.